RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक : 5
सृष्टि संवत् 1960853118
30 अप्रैल, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 5, 27-30 अप्रैल 2017 तदनुसार 18 वैशाख सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

व्रज = युद्धशिविर रचाओ

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्त्रच्चमसो दृंहता तम्।।
–ऋ० १०।१०१।८

शब्दार्थ–व्रजम् = समुदाय को, शिविर को **कृणुध्वम्** = बनाओ **सः** + **हि** = वही **वः** तुम्हारा **नृपाणः** = जन-रक्षणसाधन है। **बहुला** = बहुत-से **पृथूनि** = विशाल, भारी **वर्म** = कवचों को **सीव्यध्वम्** = जोड़ो, सियो **अधृष्टाः** = किसी से न दबाये जा सकने वाले **आयसीः** = लोहमय **पुरः** = नगर, दुर्ग **कृणुध्वम्** = बनाओ। **वः** = तुम्हारा **चमसः** = भोजनपात्र **मा** = मत **सुस्रोत्** = चूए **तम्** = **उसको दृंहत** = दृढ़ करो।

व्याख्या–पिछले मन्त्र में 'नृपाण' को उत्तेजित करने का आदेश है। इस मन्त्र में 'नृपाण' का तात्पर्य बताया है। नृपाण व्रज है, अतः कहा– **'व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः'** = व्रज बनाओ ! बाड़ा बनाओ। समुदाय बनाओ, छावनी सजाओ, वही तुम्हारा नृपाण है। व्रज का एक अर्थ है–जनमत अर्थात् सबसे पूर्व जनमत को अपने पक्ष में करो। वास्तविक नृपाण तो वही है। शेष तो उसके उपकरण हैं। बड़े-बड़े और असंख्या वर्म सिलाओ। वर्म का अर्थ केवल तनूत्राण = कवच ही नहीं है, समस्त युद्धसाधनों को वैदिक परिभाषा में वर्म कहते हैं, उनमें कवच भी सम्मिलित है। इसमें दो ऐसे साधनों का उल्लेख है जिनके बिना कोई युद्ध सफलता से जीता नहीं जा सकता, वे हैं–

(१) **'पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टाः'** = नगरों को, दुर्गों को लोहमय तथा अधृष्ट बनाओ। युद्ध-समय में ऐसा न हो कि शत्रु तुम्हारे नगरों पर आक्रमण करके उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दें। इसके लिए प्रबन्ध करना चाहिए। उनकी रचना ऐसी होनी चाहिए कि अस्त्रों-शस्त्रों का वार उस पर बेकार जाए तथा उसके अन्दर बसने वाले ऐसे वीर, दुर्दान्त हों कि शत्रु आक्रमण का साहस ही न करें।

(२) **'मा वः सुस्त्रोच्चमसो दृंहता तम्'** = तुम्हारा भोजन साधन न चूने लगे, उसे दृढ़ करो। युद्ध के दिनों में प्रजा का एक पर्याप्त भाग युद्ध में भाग ले-रहा होता है। उससे भोजन-व्यय बढ़ जाता है। उधर कृषि आदि करने वालों की न्यूनता हो जाने से अन्न की उपज बहुत घट जाती है। व्यय अधिक, आय न्यून होने से भोजन-भण्डार के समाप्त हो जाने का भय होता है। भोजन के अभाव में सेना लड़ नहीं सकती। सामान्य प्रजा में भोजन के अभाव से अशान्ति और उपद्रव खड़े हो जाते हैं। इससे जीत भी हार में परिणत हो जाती है, अतः वेद का आदेश है– **'मा वः सुत्रो च्चमसो दृंहता तम्'** = तुम्हारा भोजन-साधन न्यून न होने पाये, उसे दृढ़ करो।

देवों की इच्छा का विघात नहीं होता

यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्तदेषां नकिरा मिनत्।
अरावा चन मर्त्यः।।–ऋ० ८।२८।४

शब्दार्थ–देवाः = देव, निष्काम महात्मा **यथा** = जैसा **वशन्ति** = चाहते हैं, **तत** = वह **तथा** + **इत्** = वैसे ही असत् = होता है। **नकिः** = नहीं कोई **एषाम्** = इनका **आ** + **मिनत्** = विघात कर सकता है, **चन** = चाहे वह **अरावा** = विरोधी **मर्त्यः** = मनुष्य हो।

व्याख्या–देव = दिव्य-गुणयुक्त। दिव्य का अर्थ है जिसे चाहते तो सब हों किन्तु प्राप्त सबको न हो सके, अर्थात् असाधारण, लोकोत्तर गुणोंवाले पदार्थों की 'देव' संज्ञा है। अथवा यास्काचार्यजी के अनुसार– **'देवो दानाद् वा, द्योतनाद्दीपनाद् वा'**–जो दान करे, चमके, चमकावे, वह देव। दाता, प्रकाशमान और प्रकाशक पदार्थ देव हैं। ये जड़-चेतन सभी हो सकते हैं। सूर्य प्रकाश तथा जीवन देता है, स्वयं प्रकाशमान है, अन्यों का प्रकाशक भी है, अतः वह देव है। एक ज्ञानी जो ज्ञानदान के आवश्यक कार्य में लगा है, वह भी देव है।

इस मन्त्र में देव से दिव्य-गुणवाले चेतन मनुष्य अभिप्रेत हैं, क्योंकि– **'यथा वशन्ति देवाः'** [जैसा देव चाहते हैं] कहा गया है। चाहना = इच्छा चेतन का धर्म है। अचेतन में इच्छा होती ही नहीं, अतः ये इच्छा करने वाले चेतन ही हैं। वैसे भी देव शब्द का एक अर्थ 'विजिगीषु' [विजय की इच्छावाला] होता है। इच्छा के साथ थोड़ा-बहुत ज्ञान भी होता है, अतः 'ब्राह्मणग्रन्थों' में **''विद्वाꣳसो हि देवाः''** कहा गया है। दिव्य गुण-कर्म-स्वभाववाला जो चाहे, उसके होने में कोई आश्चर्य नहीं है, अतः कहा है– **'यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्'** = जैसा देव चाहते हैं, वैसा ही हो जाता है।

देवों का एक प्रधान गुण ऋत=सत्य-आचरण है। योगदर्शन के भाष्य में सत्यवादी की महिमा बतलाते हुए कहा गया है– **'अमोघास्य वाग् भवति'** = इसकी वाणी निष्फल नहीं होती अर्थात् सत्यवादी योगी जो कुछ कहता है, वह होकर रहता है। वेद इतना ही नहीं कहता, वरन् इससे भी अधिक कहता है– **'तदेषां नकिरा मिनत्, अरावा चन मर्त्यः'** = उनकी उस इच्छा का विघात कोई नहीं कर सकता, चाहे वह उनका विरोधी भी हो। वेद में अनेक स्थानों पर वर्णित है कि देवों के व्रत को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता। सचमुच सत्यव्रत देवों के कर्म में कोई भी बाधा नहीं डाल सकता।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

श्रद्धा एवं त्याग मूर्त्त महात्मा हंसराज

-ले० डा० सुशील वर्मा गली मास्टर मूलचन्द वर्मा, फाजिल्का

श्रद्धयाग्नि:समिध्यते श्रद्धया हूयते हवि:।

श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि।।

ऋग् 10/151/1

श्रद्धा से अग्नि समिद्ध होती है, सम्यक प्रदीप्त होती है और श्रद्धा से ही उसमें हवि दी जाती है। श्रद्धा का स्थान सर्वेश्वर्यों के शिखर पर है। यह हम मन वचन कर्म से जानते हैं, मानते हैं, कहते हैं।

श्रद्धा अर्थात् उस आस्था को, निष्ठा को, विश्वास को जो अपने अभिष्ट के लिए अपने में धारण किया जाता है। सत्य को धारण करना ही श्रद्ध है। यदि उस श्रद्धा की वास्तविकता देखनी है तो इसका ज्वलन्त उदाहरण है महात्मा हंसराज जिसने हंसराज की महात्मा पद से सुशोभित कर दिया। हंसराज में श्रद्धा की इस अग्नि की आधान करने का कार्य किया आर्य समाज लाहौर के प्रधान लाला साईदास ने। "उद्बुद्धय स्वाग्ने" ऐसी ज्वाला प्रज्जावेत की जिसमें हंसराज ने अपन सर्वस्व का त्याग कर दिया देव दयानन्द के प्रति, अपने ऋषि ऋण से उऋण होने हेतु। यहाँ यह कहना भी उचित होगा कि यह यज्ञ पुरोहित लाला साईदास ही ते जिन्होंने लाला लाजपत राय को भी आर्यसमाजी बनाया और जिन्होंने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी एवं मन्त्री लाला जीवनदास को स्वामी जी की सेवासुद्रुषा के लिए अजमेर भेजा। परिणाम स्वरूप यह यज्ञहुति ऐसी प्रज्ज्वलित हुई जो दीप्यमान होते ही आर्य समाज का उत्कृष्ट इतिहास बन गई। 30 अक्टूबर 1883 ई. को दीपावली की सान्ध्य बेला में अजमेर में ऋषि दयानन्द रूपी वैदिक सूर्य अस्त हो गया। अस्त होते होते पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के जीवन में ऐसा प्रकाश कर गया जिसन आस्तिकता को उजागर कर दिया।

5 नवम्बर 1883 लाहौर आर्य समाज में उन्होंने ऋषिवर की मृत्यु का वह अद्भुत दृश्य वर्णन किया जिससे वहाँ उपस्थित सभी लोगों की आँखे सजल हो उठी। उस करुणामय दृश्य ने ऋषि स्मृति में ऐसा प्रकाश स्तम्भ स्थापित करने का निर्णय लिया जिसमें शिक्षा के माध्यम से पौररुत्य और पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली में सार्थक समन्वय स्थापित कर आधुनिक प्रगति और वैज्ञानिक शोधादि के साथ कदम से कदम मिला कर चला जा सके, जिसमें प्राचीन परम्पराओं, आर्य शिक्षा पद्धति व अपने पूर्वजों की विरासत को भी न भूलाया जाया। परिणामस्वरूप दयानन्द एंगलो वैदिक स्कूल स्थापना का निर्णय स्वीकार्य हुआ। उपस्थित जनों के हृदय पटल पर ऐसी छाप पड़ी कि सभी ने उत्साहित होते हुए सभा स्थल पर ही 8000 रु दान रूप में प्राप्त हो गए। 25 फरवरी 1886 को लाहौर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव में लाला लाजपतराय के धारा प्रवाह भाषण, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी एम. ए. ने जाति रक्षा एवं ऋषि परम्परा को आगे बढ़ाने हेतु डी. ए. वी की स्थापना हेतु प्रेरित किया। इस यज्ञाहुति में हंसराज की गम्भीर वाणी में किया गया उद्घोष कि "अपना सम्पूर्ण जीवन बिना वेतन के दयानन्द ऐग्लो वैदिक स्कूल को समर्पित करता हूँ" उस वीरता, त्याग एवं निष्ठा ने लोगों में एक नया जोश भर दिया। लाला लाजपतराय उस विषय पर लिखते हैं "दूसरों के जीवन में अन्य प्रचार की रुचियाँ थी, व्यावसायिक, सामाजिक, राजनैतिक अथवा औद्योगिक, परन्तु उनका तो एक मात्र दयानन्द कालेज और आर्य समाज की सेवा ही सूझती थी।" आगे वह कहते है "But he alone stand as one who has given his all for it" (The Arya Samaj, P 187 L. Lagpat Rai उन्होंने अवैतनिक सेवाएँ देकर ऋषि के स्मादक रूप में स्थापित डी. ए. वी. उच्च विद्यालय (सन् 1886) और बाद में डी. एव. वी महाविद्यालय (सन् 1889) को आदर्श रूप में स्थापित कर "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए" महर्षि दयानन्द के मूलमन्त्र को शिक्षा दीप का अधिक प्रखर कर उनके स्वपनों का साकार बनाया।

ऐसी महान विभूति का जन्म पिता श्री चुन्नी लाल एवं माता गणेश देवी जी के घर बंजवाड़ा गाँव जिला होशियापुर पंजाब में 19 अप्रैल 1864 को हुआ। हंसराज ने प्राइमरी शिक्षा तो गाँव में ही प्राप्त की परन्तु आगे की शिक्षा होशियारपुर और फिर मिशन हाई स्कूल एवं पँजाब यूनिवर्सिटी लाहौर से शिक्षा प्राप्त की। 1885 में उन्होंने बी. ए. की शिक्षा उत्तीर्ण की। केवल उत्तीर्ण ही नहीं पूरे विश्वविद्यालय में दूसरे स्थान पर रहे (जबकि पहले स्थान पर पं. गुरूदत्त विद्यार्थी थे। उसके पिता जी तो 1876 सन में यह संसार छोड़ गए थे और उनके बाद परिवार को इनके बड़े भाई मुल्खराज ने अपना दायित्व निभाया। परिवार को इसके बी. ए. करने की बड़ी खुशी थी कि बहुत अच्छी नौकरी पाकर परिवार के लिए अच्छे दिन लाएगें। परन्तचु इन्होंने तो नौकरी भी ऐसी ढूँढ़ी जिसमें कोई वेतन प्राप्त नहीं होगा। धन्य है इनके बड़े भाई मुल्खराज जिन्होंने इन्हें हतोत्साहित नहीं होने दिया और कहा कि आज से मेरे द्वारा प्राप्त वेतन रूप में 80 रुपये का आधा भाग अर्थात् 40 के तुम्हारे परिवार के लिए हैं। जहाँ हंसराज का त्याग एवं श्रद्धा थी वहीं उनके भाई का स्नेह एवं त्याग भी सराहनीय था। धन्य है भाई भाई का रिश्ता, आपसी सौहार्द, एक दूसरे के प्रति स्नेह एवं त्याग। जिस समय उन्होंने डी. ए. वी. का संकल्प लिया था उनकी आयु मात्र 22 वर्ष की थी। कालान्तर में उनका परिवार स्वयं, उसकी पत्नी, दो पुत्र, तीन बेटियाँ। संसाधनों की व्यवस्था का दायित्व और दूसरी ओर अवैतरिक सेवा। इन दोनों की सम्यक व्यवस्था का भार बड़े भाई मुल्खराज ने निभाया भाई की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र बलराज ने दायित्व संभाला।

जहाँ उन्होंने डी. ए. वी. विद्यालय, तत्पश्चात् डी. ए. वी. कालेज की अवैतनिक सेवा की, उन्होंने अनेक स्थानों पर अनाथों पीड़ितों एवं विधवाओं की भी सेवा उसी त्याग एवं निष्ठा से की।

1899 में राजस्थान में भीषण अकाल एवं इससे भी पूर्व 1895-96 में अकाल एवं 1897 में मध्य भारत में अकाल पीड़ितों की सेवा में महात्मा हंसराज सबसे अग्रणी थे। कांगड़ा के भूकम्प में पीड़ितों की सेवा का जो उदाहरण इन्होंने प्रस्तुत किया उसकी प्रशंसा मुसलमान सत्रोददाता खूब प्रशंसा की थी। 1906-08 में अवध में भी भयंकर अकाल पड़ा तन भी आपने पीड़ितों की खूब सेवा की। मुल्तान क्षेत्र में पलेग की महामारी के लिए जो इन्होंने कार्य किया वह हमेशा स्मरणीय रहेगा इसी प्रकार 1918 में गढ़वाल, 1920 में उड़ीसा, 1921 में गढ़वाल एवं जम्मू तथा 1934 में विहार के अकाल और बाढ़ आपदाओं में डी. ए. वी. संस्थाओं का योगदान उल्लेखनीय था।

जहाँ वे महान समाज सुधारक, पीड़ितों की सेवा सुश्रुषा के लिए सदा तत्पर रहते थे वहीं उन्होंने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने हेतु अनन्य कार्य किए। छूआछूत का विरोध किया, विधवा विवाह को समर्थन किया। निर्धनता को वे अभिशाप मारते थे, इसके निवारण के लिए आप भी मितव्यंयी रहे और दूसरों को भी प्रेरणा देते रहे। सारांश यह कि उन्होंनेस्वामी दयानन्द के मार्ग का पूर्ण रूपेण अनुसरण किया। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि 1936 में राजस्थान के भील भाईयों की पुकार पर 'आर्य जगत' में उन्होंने हृदयस्पर्शी अपील की थी "भूख एवं ईसाइयत के पँजे में फँसे हुए भीलों की सहायता कीजिए।" उनके सत्प्रयत्नों सेवाभाष एवं त्याग का परिणाम यह रहा कि 6000 ईसाई बनाए गए भील पुन: भील बन्धु जाति के अंग बना लिए गए। केरल में मोपले मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं की मौत और 2500 के करीब हिन्दु बलपूर्वक मुसलमान बना लिए गए तब महात्मा हंसराज ने कहा था "आर्य समाज के होते यह अत्याचार सहन नहीं हो सकता" उन्होंने आर्य समाज के लिए यह ललकार के रूप में लिया और कहा कि मालाबार में हिन्दुओं को हर प्रकार की सहायता दी जाएगी। यह था ऋषिदयानन्द का प्रभाव जिसके लिए हंसराज ने "हंस हंस के तन मन अपना लुटा दिया।"

इतिहास साक्षी है कि उनका बड़ा लड़का जेल में, फांसी की सजा सुनाई जा चुकी, पत्नी मृत्यु शैया पर, जेल में माँ से भी मिलने की अनुमति नहीं, घर में चोरी हो गई, अन्तत: पत्नी चल बसी, छोटे लड़के को निमोनिया, बड़े भाई का बैंक फेल हो गया परन्तु महात्मा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय......

अलौकिक प्रतिभा के धनी-पं. गुरूदत्त विद्यार्थी

महर्षि दयानन्द के वेद प्रतिपादित सत्यज्ञान मूलक मन्तव्यों, सिद्धान्तों, शिक्षाओं और विचारों को जिस खूबी के साथ मुनिवर गुरूदत्त ने समझा, जीवन में ढाला और प्रचारित किया उस पर विचार करके मनुष्य चकित रह जाता है। जीवन में केवल एक बार और वह भी परलोक गमन करते हुए ईश के सच्चे उपासक, योगी, यति तपस्वी दयानन्द को उन्होंने देखा था। वार्तालाप करने या शंका समाधान करने अथवा महर्षि के संसर्ग में रहकर उनके सदुपदेशों से लाभ उठाने का तो गुरूदत्त जी को समय नहीं मिला परन्तु कमाल यह है कि 18 वर्ष का यह नवयुवक महर्षि के प्राणोत्सर्ग के अद्भुत दृश्य को देखने मात्र से जो कुछ प्राप्त कर पाया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। परलोक सिधार रहे ऋषि ने इन्हें एक दृष्टि देख लिया और ये कुछ के कुछ बन गए। गुरूदत्त ने ऋषि का संदेश अपने हृदय पटल पर अंकित कर लिया और समझा कि इसके प्रचार का उत्तरदायित्व मुझ पर ही है।

संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, फारसी, पदार्थ विज्ञान, भूगर्भ विद्या, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, शरीर विज्ञान आदि विविध विद्याओं में पारंगत इस नवयुवक को किस शक्ति ने आर्य समाज की ओर आकृष्ट किया? पाश्चात्यों की नास्तिकता बढ़ाने वाली निकम्मी शिक्षा और विचारधारा से पृथक कर सच्ची आस्तिकता का पाठ किसने पढ़ाया? संस्कृत ही पूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है, यह ध्रुव सत्य गुरूदत्त को किसकी कृपा से ज्ञात हुआ? क्या किसी शास्त्रार्थ में पराजित होकर उसने ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया? या किसी की तर्कणा शक्ति से पराभूत होकर उसे अपना मार्ग बदलना पड़ा? नहीं बिल्कुल नहीं। कारण के बिना कोई कार्य नहीं हुआ करता। गुरूदत्त के जीवन की चिन्तनधारा में परिवर्तन भी बिना कारण कैसे हो सकता था। महान् संस्कारी आत्मा गुरूदत्त को एक दूसरी विलक्षण प्रभु भक्ति में रंगी दयानन्द की आत्मा ने बिना कुछ कहे ही अपने समान आस्तिकता के रंग में रंग डाला। महर्षि दयानन्द के प्राणोत्सर्ग दृश्य ने गुरूदत्त का जीवन, चिन्तन, दृष्टिकोण सभी कुछ बदल दिया।

एक बार किसी ने पं. गुरूदत्त विद्यार्थी से कहा कि आपको स्वामी जी के योगी होने के बारे में अनेक बातों का ज्ञान है। आप उनका जीवन चरित्र क्यों नहीं लिखते? अत्यन्त गम्भीर होकर उत्तर दिया कि मैं प्रयास कर रहा हूं। प्रश्नकर्ता ने पुन: पूछा- जीवन चरित्र कब छप जाएगा? गुरूदत्त बोले आप कागज पर लिखा जीवन चरित्र समझ रहे हैं, मेरे विचार में महर्षि का जीवन चरित्र अपनी पूर्ण आयु में लिखना चाहिए और इसी के लिए मैं प्रयत्न कर रहा हूं।

वेद की सत्यता पर गुरूदत्त की ऐसी दृढ़ आस्था थी कि जब कभी किसी वैज्ञानिक के कथित आविष्कार की कोई उनसे चर्चा करता तो वे झट पे उत्तर देते कि हां भाई वह वैज्ञानिक सच्चाई के निकट आ गया है। सत्य पूर्ण है और प्रभु प्रदत्त वेद ज्ञान तथा सृष्टि नियम द्वारा पूर्व ही प्रकाशित है। जिस वैज्ञानिक को जब जितना बोध होता है उतना वह असत्य से दूर होकर सत्य के निकट आ जाता है। बस यही आविष्कार है, इससे आगे कुछ नहीं। अपने ऐसे ही पवित्र और सत्य ज्ञान मूलक विचारों को दिसम्बर 1885 में लाहौर आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर दिए गए अपने भाषण में गुरूदत्त जी ने व्यक्त करते हुए कहा था।

आधुनिक विज्ञान चाहे उसमें कितने ही गुण क्यों न हो, जीवन की समस्या पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालता। वह मनुष्य की आत्मा में आन्दोलन पैदा करने वाले सब से महान् और कठिन प्रश्न मनुष्य जाति के आदि मूल और इसके अन्तिम भाग्य के हल करने में कुछ भी सहायता नहीं करता। आधुनिक विज्ञान चाहे प्रत्येक नाड़ी और हड्डी को चीर ड़ाले और लहू की बूंद की अतीव सूक्ष्म दर्शक यन्त्र द्वारा जो सम्भवत: उसे मिल सकता है, बड़ी सूक्ष्म परीक्षा कर ले, पर इस प्रश्न पर उससे कुछ भी नहीं बन पड़ता कि वह जीवन के रहस्य को खोल नहीं सकता। चाहे शताब्दियों तक चीर फाड़ और परीक्षण करता रहे। जीवन की समस्या वेदों के सहायता के बिना हल नहीं की जा सकती। वही केवल इस अद्भुत रहस्य का उद्घाटन कर सकते हैं और उन्हीं की ओर वैज्ञानिक लोगों को अन्त में आना पड़ेगा।

इस प्रतिभाशाली वेद मनीषी, तपस्वी विद्वान् को पूरे 26 वर्ष की जन सेवा का अवसर न मिल पाया परन्तु इस स्वल्प जीवन में ही उसने अमित यश और कीर्ति का अर्जन कर लिया। पं. चमूपति जी ने ठीक ही लिखा था कि-

यदि इनकी आयु कुछ लम्बी होती तो इनके द्वारार न जाने क्या-क्या पांडित्य के, विकास के, तर्क के, आध्यात्मिक अनुभूति के अमूल्य रत्न केवल आर्य समाज को ही नहीं किन्तु सम्पूर्ण मानव संसार को हस्तगत होते। इस अपरिपक्व अवस्था में इनके लिखे हुए लघु लेख तथा पुस्तिकाएं ही इनके असीम पांडित्य के बीच ही में रूक गए प्रवाह के अकाट्य प्रमाण हैं। गुरूदत्त केवल पंडित ही न था, वह सच्चा प्रतिभाशाली ऋषि पुत्र था। उसे न धन की परवाह थी और न जन की। सच की वेदि पर उसने अपना सुख, सम्पत्ति और अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

पं. गुरूदत्त विद्यार्थी असाधारण प्रतिभा के धनी थे। इतनी कम आयु में उन्होंने जो ज्ञान प्राप्त किया था उससे उनकी मेधा बुद्धि का ज्ञान हो जाता है। छोटी सी आयु में गुरूदत्त विद्यार्थी ऐसे महान् कार्य कर गए जो पूर्ण आयु भोगने वाला व्यक्ति भी नहीं कर पाता। काश गुरूदत्त विद्यार्थी कुछ समय और इस संसार में रहते तो आर्य समाज का स्वरूप ही कुछ और होता। ऐसे अलौकिक बुद्धि के धनी और महर्षि दयानन्द के सच्चे शिष्य पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का 26 अप्रैल को जन्मदिवस आ रहा है। उस महान् आत्मा के जन्मदिवस पर उनके द्वारा किए गए कार्यों को स्मरण करते हुए वेद प्रचार के कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास करें। उनके जन्मदिवस पर आर्य समाज की उन्नति के लिए प्रण लें, यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धाजंलि होगी।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

नव विक्रमी संवत् 2074 के शुभारम्भ एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में सभी आर्य समाजों द्वारा सम्मिलित रूप से एक कार्यक्रम का आयोजन दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में 9 अप्रैल 2017 को 4 से 6 बजे तक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारम्भ संसार के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ के द्वारा हुआ। श्री श्रवण बत्रा जी एवं आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने यजुर्वेद शतक यज्ञ एवं नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के विशेष मन्त्रों की आहुतियों से यज्ञ सम्पन्न कराया। तीन यज्ञकुण्डों पर बैठें यजमानों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां डाली और विद्वानों का आशीर्वाद प्राप्त किया। यज्ञ के पश्चात श्री विजय सरीन जी ने एक प्रभु भक्ति का भजन एवं श्रीमती राजेश शर्मा जी ने एक भजन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर से आए आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने आर्य समाज एवं नव संवत् की महत्ता पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के पदचिह्नों पर चलने से संसार का कल्याण हो सकता है। आर्य समाज के नियम सार्वभौम हैं जिनमें शिक्षा दी जाती है कि सत्य को ग्रहण करो और असत्य का त्याग करो, धर्म का पालन करो और अधर्म से दूर रहो, अविद्या का नाश करो और विद्या की वृद्धि करो, अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहो बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझो। इसी कारण आर्य समाज के नियम सम्पूर्ण विश्व की उन्नति के आधार हैं। इस कार्यक्रम का संचालन जिला आर्य सभा के महामन्त्री डा. विजय सरीन जी ने किया। जिला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने आए हुए सभी अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद किया। इस अवसर पर लुधियाना की सभी आर्य समाजों के अधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के पश्चात सभी ने प्रीतिभोज ग्रहण किया।

-विजय सरीन महामन्त्री जिला आर्य सभा

जन्म दिवस मनाते हुए विचारणीय कुछ मुख्य बातें

-ले० मनमोहन कुमार आर्य, पताः 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

संसार में तीन पदार्थ वा सत्तायें अनादि, अनुत्पन्न, सनातन, शाश्वत्, नित्य, अविनाशी एवं अमर हैं। इनके नाम हैं ईश्वर, जीव एवं प्रकृति। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अजन्मा, अमूर्त, आकार रहित, शरीर रहित, अवतार न लेने वाला और सृष्टिकर्ता है। उसका स्वरूप सदैव अपने यथार्थ रूप में, जैसा पूर्व पंक्तियों में वर्णन किया है, ही रहता है। वह सर्वशक्तिमान होने से अपना प्रत्येक कार्य अपने निराकार व सर्वव्यापक रूप में स्थित रहकर कर सकता है। उसे जन्म व अवतार लेने की किंचित भी आवश्यकता नहीं है। जो लोग ईश्वर का जन्म व अवतार मानते हैं वह अविद्याग्रस्त लोग है।

अपनी अविद्या की आड़ में बहुत से लोग अपना स्वार्थ भी सिद्ध करते हुए देखे जाते हैं। ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है और हमेशा इसी स्वरूप में विद्यमान रहता है। उसका यथार्थ स्वरूप ही संसार के सभी वा प्रत्येक मनुष्य के लिए ध्यान, विचार व चिन्तन सहित उपासना करने योग्य है। यह भी धन देने योग्य बात है कि उपासना तभी फलीभूत होती है जब उसे वैदिक विधि के अनुसार की जाये। ईश्वर के समान संसार में कोई नहीं है, अधिक होने का तो प्रश्न ही नहीं है। यह भी जानने योग्य है कि संसार में एक ही ईश्वर, सर्वव्यापक चेतन सत्ता, होने के कारण उसके अनेक नामों गाड, अल्लाह, खुदा, वाहे गुरु आदि शब्द एक प्रकार से उसी एक ईश्वर के लिए प्रयुक्त होते हैं।

ईश्वर के बाद दूसरा मुख्य पदार्थ वा सत्ता जीवन की है जो संख्याओं में अनन्त हैं। इन जीवात्माओं में एक हम व एक आप भी हैं। जीवात्मा ईश्वर से पृथक एक स्वतन्त्र सत्ता है। यह मनुष्य शरीर में होने पर कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु अपने शुभ व अशुभ कर्मों के सुख व दुःखरूपी फल भोगने में ईश्वर के अधीन है। यह जीवात्मा अपने पूर्वजन्मों के कर्मानुसार मनुष्य व अन्य योनियों में जन्म प्राप्त कर ज्ञान व कर्मों को करने वाला, एकदेशी, ससीम, जन्म मरण के चक्र में फंसा हुआ, वेदज्ञान को प्राप्त कर उसके अनुरूप कर्मोपासना से मोक्ष प्राप्त करने वाला, अजर, अमर, नित्य आदि गुण, कर्म व स्वभाव वाला है। एकदेशी, समीम, अणुमात्र होने से यह अल्पज्ञ है अतः इसे ईश्वर से सहायता व कृपा की अपेक्षा है। गीता के शब्दों में जीवात्मा के स्वरूप पर कुछ कुछ प्रकाश पड़ता है जिसमें कहा गया है कि शस्त्र जीवात्मा को काट नहीं सकते, अग्नि इसे जला नहीं सकती, जल से यह गीली नहीं होती और वायु से यह सूखती नहीं है।

जीवात्मा बिना मनुष्य जन्म धारण किये अपने आप को जान व पहचान भी नहीं सकती, अतः इसे ईश्वर से अपने पूर्वजन्म के कर्मों वा प्रारब्ध के अनुसार मनुष्य जन्म की अपेक्षा रहती है जिससे यह वेदज्ञान की प्राप्ति व उसके अनुसार आचरण कर समस्त दुःखों से छूट कर मोक्ष को प्राप्त हो सके। जीवात्मा का स्वभाविक गुण ज्ञान व कर्म है। हमें अपना, ईश्वर व इस सृष्टि का यथार्थ ज्ञान होना चाहिए तभी हमारा मनुष्य जन्म सार्थक हो सकता है। हम अपनी आंखों से अपना, अन्य मनुष्यों व पशु, पक्षियों एवं इस ब्रह्माण्ड के सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, जल, वायु, आकाश व पृथिवी का दर्शन एवं अनुभव करते हैं। संसार के जीवेतर सभी पदार्थ जड़ पदार्थ हैं जो मूल प्रकृति, सत्, रज व तम गुणों वाली प्रकृति, की साम्यावस्था का विकार हैं।

यह विकार ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में किया था जिससे यह सृष्टि बनी है। उसी परमेश्वर के नियमों के अनुसार प्रकृति में नई नई रचनायें व परिवर्तन हो रहे हैं। इसका सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करना हो तो इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति और वेदों का अध्ययन करना होगा। ऐसा करके हम प्रकृति वा सृष्टि का विस्तार से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जो कि विज्ञान पर आधारित होने से युक्ति एवं तर्क संगत है। पूर्व पंक्तियों में हमने ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति के बारे में संक्षेप में जो लिखा है वहीं इस संसार का रहस्य व निचोड़ है।

इसे जान लेने पर ही हम वेद, वैदिक साहित्य एवं स्वविवेक से अपने कर्तव्यों का निर्धारण कर सकता हैं। हम मूलतः एक जीवात्मा हैं। पूर्वजन्मों के अवशिष्ट कर्मों का फल भोगने के लिए ईश्वर ने हमें यह मनुष्य जन्म दिया है। यह जन्म ज्ञान की प्राप्ति और उन कर्तव्यों के पालन के लिए हैं जिससे हम पूर्वकर्मों का भोग करने के साथ नये सत्कर्मों को करके सभी प्रकार के दुःखों से छूट जायें और मृत्यु होने पर जन्म व मरण के चक्र से भी छूट कर मोक्ष को प्राप्त हो जायें। हमारे इस प्रयोजन को सफल करने के लिए ही परमात्मा ने हमें वेद ज्ञान दिया था। उसी वेद ज्ञान को ऋषियों ने सरल शब्दों में समझाने के लिए अनेक प्रकार के ग्रन्थों की रचना की। आर्य विद्वानों ने उस परम्परा का निर्वहन जारी रखा जिससे आज समस्त वैदिक वांग्मय हिन्दी भाषा में भी उपलब्ध है। ऋषि दयानन्द ने वेदों के सरलीकरण के प्रयास में ही सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, संस्कार-विधि, आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। मनुष्य जीवन में कर्तव्यों पर ध्यान दें तो सभी मनुष्यों को पांच महायज्ञ प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक करने चाहिये। यह पांच महायज्ञ सन्ध्या या ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ या अग्निहोत्र, पितृयज्ञ या माता-पिता व वृद्धों की सेवा व सम्मान, अतिथियों व विद्वानों का स्मान व सत्कार तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ अर्थात् मनुष्येतर प्राणियों के प्रति प्रेम व अहिंसा का भाव रखकर उनके जीवनयापन व भोजन आदि में सहायक बनना। यदि हम यह पांच महायज्ञ श्रद्धापूर्वक करते हैं और इसके साथ ही शुद्ध व पवित्र भोजन जो हमें सदाचार का पालन करते हुए प्राप्त होता है, आसन व प्राणायामों के साथ योग की रीति से ईश्वरोपासना एवं देशभक्ति व समाज की उन्नति व सुधार, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि के साथ अहंकार व क्रोध पर नियंत्रण रखते हुए सब प्राणियों को अपने समान व स्वयं को अन्य प्राणियों के समान क्रियात्मक रूप में देखते हैं तो हमारा जीवन सफल होता है और हम दुःखों से बचने के साथ मोक्ष के निकट भी पहुंचते वा उस ओर बढ़ते हैं। सभी मनुष्यों को इस पर अवश्य ध्यान देना चाहिये और साम्प्रदायिक पूजा पद्धतियों का त्याग कर वैदिक धर्म व संस्कृति को अपने जीवन में अपनाना चाहिये।

हम सब संसार में किसी एक दिन जन्में हैं। वह दिन हमारा जन्म दिवस कहलाता है। इस जन्म दिवस की सार्थकता यह है कि हमें पता होना चाहिये कि हमारा मनुष्य जीवन का बहुमूल्य समय तेज़ी से व्यतीत हो रहा है और हम जीवन के अन्त की ओर बढ़ रहे हैं। मृत्यु का किसी को पता नहीं कि यह, शीघ्र, व देर, कब आयेगी। अतः हमें साधना पथ पर आरुढ़ होकर ईश्वर द्वारा वेदों में निर्दिष्ट अपने कर्तव्यों को पूरा करना है। यदि आयु अधिक हो गई है तो समझिये हमें अधिक कार्य करना शेष है। गृहस्थ होकर भी मनुष्य सभी धार्मिक व सामाजिक कर्तव्यों का पालन कर मोक्ष का अभिलाषी हो सकता है और मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। वैदिक साहित्य में ऐसे ऋषियों का भी वर्णन है जो गृहस्थी थे। अनेक स्त्रियां भी ऋषिकायें हुई हैं जिनके नाम वैदिक साहित्य में

(शेष पृष्ठ 7 पर)

वेद एवं पर्यावरण

-ले० शिव नारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादावाड़ी,कोटा (राज.)

तैत्तिरीयोपनिषद ब्रह्मानन्द वल्ली अनुवाक प्रथम में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम इस प्रकार बताया गया है, 'तस्माद्वा एतस्मादात्मन् आकाश: सम्भूत:। आकाशद्वायु:। वायोरग्नि:। अग्नेराप:। अद्भ्य: पृथिवी। पृथिव्या ओषधय:। ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नाद् रेत:। रेतस: पुरूष। स वा एष पुरूषोऽन्नरसमय:। अर्थात् उस परमात्मा से आकाश उत्पन्न हुआ, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथिवी, पृथ्वी से अनादि ओषधियां, ओषधियों से वीर्य और वीर्य से पुरूष उत्पन्न हुआ इसलिए पुरूष अन्न रस मय है।

अब पर्यावरण का अर्थ है चारों ओर से ढका हुआ। हम पृथ्वी पर रहते हैं और आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा पृथ्वी पर स्थित ओषधियों, पेड़ पौधो और पशु पक्षियों घिरे हुए हैं। इनमें सन्तुलन बनाए रखना पर्यावरण शुद्धता तथा असन्तुलन बना देना पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। वेदों में पर्यावरण में सन्तुलन बनाए रखने से सम्बन्धित सैकड़ों मंत्र है। इस लेख में हम वेदों के मंत्रों के आधार पर पर्यावरण पर चर्चा कर रहे हैं।

पर्यावरण का पहला घटक आकाश है। आकाश का अर्थ है वह रिक्त स्थान जिसमें से होकर हमारा आना और जाना होता है। आकाश ही सभी आकाशीय पिण्डों का आश्रय भी है। मनुष्य को स्वास्थ रहने के लिए खुले आकाश की अधिक आवश्यकता होती है। रात्रि में सोते समय भी उसे कम से कम 500 घन फुट आकाश चाहिए। विज्ञान के इस युग में कृत्रिम उपगृहों के कारण तथा वायु और ध्वनि प्रदूषण के कारण आकाश भी प्रदूषित हो रहा है। ओजोन परत में छेद हो जाने से सूर्य की परा बैंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंच कर कई रोगों को जन्म दे रही है साथ ही प्रदूषित वायु भी आकाश में पहुंच रही है।

आकाश के बाद वायु का स्थान आता है। प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन 13.5 कि. ग्रा. शुद्ध वायु की आवश्यकता होती है। वायु के अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। वायु ने पृथ्वी को 800 कि. मी. ऊपर तक चारों ओर से घेरा हुआ है। वायु कई गैसों का मिश्रण है, इसमें नाइट्रोजन 79 प्रतिशत ऑक्सीजन 20 प्रतिशत शेष 1 प्रतिशत भाग में कार्बन-डाई ऑक्साइड, विरल गैसें, मिट्टी के कण और धुआं आदि है।

हमारे स्वास्थ्य के लिए इन सबका एक निश्चित अनुपात में पाया जाना आवश्यक है। हम श्वास द्वारा जो हवा फेंफड़ों में लेते हैं उनमें से ऑक्सीजन रक्त में मिली हुई अशुद्धियों को जलाकर नष्ट कर देती है। फेफड़ें से शुद्ध रक्त हृदय द्वारा रक्त वाहिनियों के माध्यम से पुन: शरीर में परिभ्रमण हेतु भेज दिया जाता है। नाइट्रोजन ऑक्सीजन के जलाने की क्रिया को नियंत्रित करती रहती है। श्वास निकालते समय हवा में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा अधिक होने और ऑक्सीजन की मात्रा कम होने से वह पुन: श्वास लेने योग्य नहीं होती है। साथ ही आवगमन के साधनों और कल कारखानों द्वारा भी कार्बन डाई ऑक्सीजन और कई विषैली गैसें भी वायुमण्डल में मिलकर उसे प्रदूषित कर देती है। इसे शुद्ध करना आवश्यक है। पेड़ पौधे इस कार्य में सहायक होते हैं। सूर्य से प्रकाश में पेड़ पौधे वायु में से कार्बन डाई ऑक्साइट सोख लेते हैं। संश्लेषण क्रिया द्वारा क्लोराफिल की उपस्थिति में कार्बन् अपने विकास के लिए रख लेते हैं और ऑक्सीजन को निकाल देते हैं। वास्तव में ये ऑक्सीजन बनाने की फेक्ट्रियाएं हैं। हमारे शरीर में हड्डियों के निर्माण में नाइट्रोजन चक्र का बड़ा हाथ होता है। वायु एक दूसरे दृष्टि कोण से भी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शरीर में रक्त वाहिनियों में बहता हुए रक्त बाहर भी ओर प्रति वर्ग इंच पर 15 पोण्ड दबाब डालता है। वायु बाहर से अन्दर की ओर प्रत्येक वर्ग इंच पर इतना ही दबाब डाल कर इसे सन्तुलित कर हमारे शरीर को बनाए रखता है। वेदों में आयु के विषय में बहुत कुछ कह दिया गया है। निम्न ऋचा बताती है कि वायु गैसों का मिश्रण हैं और शरीर को निरोग बनाए रखता है तथा गंदगी को बहा ले जाता है।

द्वा विमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावत:।

दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु दद्रप:।। ऋ. 10.137.2.

प्रत्यक्ष भूत दो हवाएं सागर पर्यन्त और सागर से दूर तक फैली हुई हैं। इनमें से एक तो शरीर को बल देती है और दूसरी अशुद्धि को बहा ले जाती है। वायु सब स्थानों में व्याप्त है एवं सभी प्राणियों का पोषक है।

त्वमिन्द्रभि भूरसि विश्रवा जातान्योजसा:।

स विश्वां भुव आभव:।। ऋ. 10.153.5.

यह वायु सब उत्पन्न हुए प्राणियों का अपने बल से अभि भाविता है। वह सब स्थानों पर प्राप्त होता है। वायु का पाचन क्रिया में भी बड़ा भाग होता है।

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति।

ये अद्भिरीशाना मरूतो वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहस:।। अथर्व. 4.27.5.

जो मरूत गण जीवन को अन्न से और जल से तृप्त करते हैं और जो चर्बी से संयुक्त करते हैं और समर्थ वायु गण से प्राणियों को सींचते हैं वे हमें कष्ट से छुड़ावें।

अब हमारा कर्त्तव्य है कि हम वायु को शुद्ध करें। वायु को शुद्ध करने का सबसे अच्छा तरीका यज्ञ है। इस पर डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक संस्कार चन्द्रिका में अच्छा प्रकाश डाला है। हम उसी पर विचार करेंगे। उन्होंने लिखा है-(1) अग्नि में डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता है। अग्नि का कार्य स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म में बदल कर फैला देना है। हवन में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म कणों में बदल कर अन्तरिक्ष में फैला जाता है। (2) अग्नि में डालने से पदार्थ के गुण बढ़ जाते हैं। साथ ही उनमें गुणात्मक परिवर्तन भी हो जाता है। (3) अग्नि दुर्गन्धित वस्तु को जलाकर नष्ट कर देती है और सुगन्धित वस्तु के जला कर उसकी सुगन्ध को दूर दूर तक फैला देती है। (4) हवन में कस्तूरी, केशर, गुग्गल, अगर, तगर, जायफल, जावित्री, जटामांसी आदि अनेक कीटाणु नाशक पदार्थ डाले जाते हैं। इससे आकाशस्थ रोगाणु मर जाते हैं तथा इनका धुआं मेघों के निचले भाग में धुलकर पानी को शुद्ध बना कर वर्षा भी करा देता है। पर्यावरण का अगला घटक अग्नि है जो हमें सूर्य द्वारा वैसे ही प्राप्त है। हमें धूप से बचकर नहीं रहना है। धूम में विटामिन डी अपने आप मिल जाता है। खुले में रहना सदैव लाभदायक है। पर्यावरण का अगला घटक जल है। हमारे शरीर का अधिकांश भाग जल का बना हुआ है। शुद्ध जल हमें लम्बी आयु देता है।

आपो भद्र घृतमिदाप आसन्नग्नी षोमो विभ्रत्यामइत् ता:।

तीव्रो रसो मधुपृचामरंगम आ मा प्राणेन सह वर्चसागमेत्।। अथर्व. 3.13.5.

जल मंगलमय और जल ही घृत था। वह जल ही मधुरता से भरी जल धाराअणों का परिपूर्ण मिलने वाला तीव्र रस मुझको प्राण और बल के साथ आगे ले चले।

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। ऋ. 10.9.1.

निश्चय से जल सुखदाता है। वे हमें अन्न प्रदान करें। हमारे लिए ज्ञान का साधन बनें।

आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनी।

आप: सर्वस्य भेषजी स्तास्ते कृणवन्तु भेषजम्।। ऋ. 10.137.6.

जल निश्चय ही भेषजरूप है। जल रोग को दूर करने वाला है। जल सब प्राणियों की चिकित्सा करें। वेदों में जल की उपयोगिता बताने वाले कई मंत्र है। वहां बताया गया है कि जल ही जीवन है। जल के अभाव में रेगिस्तान के अतिरिक्त कोई अन्य कल्पना करनी ही व्यर्थ है। जल भोजन बनाने में, सफाई करने में, कृषि-कर्म करने में, विद्युत उत्पन्न करने, वाष्प इंजिनों आदि को चलाने में काम आता है। इस विषय में निम्न मंत्र पठनीय है-

आप पृणीत वरूथं तन्वे मम।
ज्योक्च सूर्य दृशे।।

ऋ. 10.9.7.

(क्रमश:)

हमारी पूर्ण बुद्धि हमें विनाश से बचावे

ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलाभाष ०९३५४८४५४२६

हमारी बुद्धि सदा पर्वती हो- अर्थात् हमारी बुद्धि सदा हमारी मनोकमनाओं को पूर्ण करने वाली हो। बुद्धि मानव को विनाश से बचाती है। इसलिए यह बुद्धि हमें विनाश के मार्ग से बचाने वाली हो। इस बात का विचार यजुर्वेद के प्रथम अध्ययन का यह उन्नीसवां मन्त्र हमें इस प्रकार उपदेश कर रहा है:-

शर्मास्यवधूतं

रक्षोऽवधूताऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेतु।

धिषणासि पर्वती प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु दिवः

स्कम्भनीरसि धिषणासि पार्वतेयी प्रति त्वा पर्वती वेत्तु।। यजुर्वेद 1. 19।।

मानव अपने जीवन में ज्ञान, इसके साथ ही साथ अपने जीवन में बल तथा यज्ञ को अपनाता है। अर्थात् मानव बुद्धिजीवी प्राणी होने के नाते सदा ज्ञान का संचय करने का यत्न करता है। इस मानव की यह भी आकांक्षा होती है कि वह इतना बलवान् हो कि कोई भी उसके समकक्ष सामने न आ पावे। इसके साथ ही साथ वह दूसरों में अपने आप को सम्मानित भी देखना चाहता है, इसलिए वह अनेक प्रकार के यज्ञ (परोपकार के कार्य) करता है। इस निमित उसकी कई प्रकार की लालसाएं होती हैं, उसे कई प्रकार के उपाय करणीय होते हैं। यथा:

१. सदा आनन्दित रह:

हे प्राणी तुं राक्षसी आदतों से रहित होने के कारण, बुरी आदतों से रहित होने के कारण तेरा जीवन आनन्द से भरा हुआ है, तू आनन्द मयी वातावरण में रह रहा है। तू ने जीवन प्रयन्त ऐसे कार्य करे हैं कि जिस से राक्षसी प्रवृतियां भयभीत हों, तेरे यत्नों से भयभीत हुई बुरी आदतें तेरे से दूर भाग गयी हैं। इससे तेरे अन्दर जो दूसरे को कुछ न देने की भावना थी, वह दूर हो गयी हैं। अब तू दूसरों की सहयता करने वाला, दूसरे के लिए सेवा भावना वाला बन गया है। इन भावनाओं में बुराई कभी रह ही नहीं सकती। अत: दूसरों का सहायक बन कर तू आनन्द में रहने वाला बन गया है।

२. दिव्य गुणों का स्वामी बन हम अभय बनें-

दिव्य गुण वह है जिनके होने से अदिति देवी हमारे निकट आती है। ऐसे गुण हमारे अन्दर पैदा हों, इसके लिए उपाय करने की प्रेरणा देते हुए मन्त्र आगे कह रहा है कि हम सदा अदिती के सम्पर्क में रहें। अदिति हमारे सम्पर्क में हो। हम सदा अदिती के सम्पर्क में रहें। भाव यह है कि हम सदा अदीनता के वातावरण में निवास करें। कभी किसी से कुछ लेने की इच्छा न करें, सदा ही दूसरे को देने की भावना ही हमारे अन्दर हो। हमारे अन्दर सदा दिव्य गुणों को ही स्थान मिले। हम दिव्य गुणों के स्वामी रहें। हम कभी असभ्य बन कर किसी दूसरे को तंग न करें, परेशान न करें किन्तु ऐसा भी न हो कि हमें किसी दूसरे के सामने हाथ पसारना पड़े, दूसरे के आगे गिडगिडाना पड़े। इस से बचने के लिए हमने यत्न पूर्वक दिव्य गुणों को अपने अन्दर विकसित करना है। यह दिव्य गुण रूपी देवीय सम्पति हमें अभय से ही प्राप्त होती है। इसलिए हमने अभय बनना है।

जब मानव अभय बनने का प्रयास करता है तो इस अभय बनने के लिए मानव को बुद्धि की आवश्यकता होती है। प्रत्येक उन्नति के कार्य में जीव को बुद्धि सदा सहायिका के रुप में प्राप्त होती है। बुद्धि की सहायता से ही उत्तमता, अभयता प्राप्त की जा सकती है। कहा भी है कि यदि आत्मा रथी है तो बुद्धि इस रथ के लिए सारथी होती है। बिना सारथी के रथ एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। इस प्रकार ही बुद्धि के बिना मानव उन्नति पथ पर एक कदम भी नहीं बटा सकता। मानवीय आत्मा को इस शरीर पर शासन करने वाला राजा मान लें तो हम कह सकते हैं कि इस राज्य के लिए मन्त्री का कार्य बुद्धि ही करती है। यदि हम परिवार में इसकी कल्पना करना चाहें तो हम कह सकते हैं इसमें पति को आत्मा मानें तो पत्नी इस परिवार के लिए बुद्धि रूप में प्राप्त होती है। इतना ही नहीं यदि हम इस की स्पर्धा देवों में करें तो हम कह सकते हैं कि आत्मा महादेव है तो महादेव की पत्नि पार्वति का कार्य यह बुद्धि ही करती है।

इसलिए ही यह मन्त्र उपदेश कर रहा है कि हे मानव ! तेरे पास धारण करने वाली बुद्धि है। तू पार्वती के समान पूर्व करने वाली बुद्धि का भी स्वामी है। इतना ही नहीं सब प्रकार की न्यूनताओं को, सब प्रकार की कमियों को पूर्ण करने वाली बुद्धि का स्वामी है। इसलिए तुझे सदा अदिति का आशीर्वाद, अदिति का सम्पर्क, अदिति का सहयोग मिलता रहे। इस की सहायता से तेरे मार्ग की सब बाधाएं दूर हों।

३. पूर्णता की शक्ति का रक्षक बन:

बुद्धि क्या होती है ? बुद्धि वह होती है जो प्रकाश की धारणा दे। भाव यह है कि बुद्धि मानवीय प्रकाश का साधन है, बुद्धि मानव को ठीक मार्ग पर, प्रकाश की ओर ले जाने वाली होती है। हम जानते हैं कि एक भवन को खड़ा करने के लिए उसके नीचे कई प्रकार के खम्बे लगाए जाते हैं। आज तो बीस से भी अधिक मन्जिल के भवन बन रहे हैं। इतने ऊंचे भवन साधारण नींव पर तो खड़े नहीं हो सकते। इन भवनों को प्रतिक्षण सहारे की आवश्यकता होती है। इस सहारे के रूप में हम बड़े बड़े मजबूत, लोहे की छड़ों से युक्त सीमेन्ट के खम्बे खड़े करते हैं। हम आज बड़े बड़े पुल बनाते हैं तथा मैट्रो के भागने के लिए जो लाईन बिछाते हैं उनकी पटड़ियों को भी बड़े बड़े खम्बों का सहारा देते हैं। इन सहारों के बिना यह भारी भरकम भवन खड़े ही नहीं हो सकते। किसी भी समय गिर सकते हैं। इस प्रकार ही मानवीय जीवन में हमारी यह बुद्धि भी इन खम्बों का ही काम करती है।

हमारे सारे के सारे ज्ञान रूपी प्रकाश का साधन हमारी यह बुद्धि ही होती है। जब तक यह बुद्धि ठीक मार्ग पर चल रही है, तब तक ही हम उन्नति पथ पर आगे बटते हैं, ज्यों ही यह विकृत हो जाती है, त्यों ही हमारा मार्ग भी बदल जाता है। इसकी विक्रति के साथ ही हमारा मार्ग अन्धकार की ओर मुड़ जाता है। अब हमारे अन्दर का प्रकाश नष्ट हो जाता है तथ इसका स्थान अन्धेरा ले लेता है। इसलिए मन्त्र कहता है कि हे मानव ! तू सदा ऐसा पुरुषार्थ कर, ऐसे प्रयास कर कि तेरी यह बुद्धि, तुझे सदा पूर्ण बनाने वाली ही बनी रहे। इस प्रकार हम यह पूर्ण करने की जो क्रिया है, उसे हम पूर्ण रूप में जान लेवें। इसका भाव यह है कि हमारी इस बुद्धि में हमारे अन्दर की कमियों को दूर करने की क्षमता सदा पूर्ववत ही बनी रहे। हमारी यह बुद्धि कभी भी उल्टे पथ की ओर बढ़कर हमारे विनाश का कारण न बने। इसलिए हम सदा परमपिता से यह प्रार्थना करें कि वह प्रभु हमें सदा इतनी शक्ति दे, सामर्थ्य दे कि हम अपनी इस बुद्धि को पूर्णता के लिए ही बनाए रखें।

श्रीमती सुशीला भगत लगातार 5वीं बार प्रधाना बनी

आर्य समाज मॉडल टॉऊन के स्त्री आर्य समाज का त्रैवार्षिक चुनाव दिनांक 13 अप्रैल का सम्पन्न हुआ जिसमें समाज की सभी महिलाओं ने भाग लिया और श्रीमती सुशीला भगत जी को पुन: 5 वीं बार स्त्री आर्य समाज की प्रधान घोषित किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ से हुआ जिसमें श्रीमती सशीला भगत और शशि मैहता ने यजमान बनकर आहुतियां डाली। यज्ञ के पश्चात डॉ. सुषमा चोपड़ा जी की अध्यक्षता में चुनावी प्रक्रिया शुरू हुई। सर्वप्रथम सभी महिलाओं ने मिलकर गायत्री महामन्त्र का पाठ किया। डॉ. सुषमा चोपड़ा ने कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए प्रधाना पद के लिए नाम प्रस्तुत करने का प्रस्ताव रखा। दमयन्ती सेठी ने अपनी ओर से श्रीमती सुशीला भगत का नाम प्रधान पद के लिए प्रस्तुत किया। रजनी सेठी और सरिता विज ने उसका अनुमोदन किया। बार-बार कहने पर भी कोई नाम प्रस्तुत न होने पर श्रीमती सुशीला भगत को स्त्री आर्य समाज की आगामी तीन वर्षो के लिए प्रधान घोषित कर दिया गया। श्रीमती सुशीला भगत जी ने सभी महिलाओं का धन्यवाद करते हुए कहा कि मैं सभी की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पद के लायक समझा और निरन्तर पांचवी बार मुझमें विश्वास जताया। समाज के सभी कार्य सहयोग से ही सम्पन्न होते हैं और आप सबका सहयोग मुझे बराबर मिलता रहता है। श्रीमती प्रोमिला अरोड़ा मन्त्राणी स्त्री आर्य समाज ने गत तीन वर्षों की गतिविधियों का ब्यौरा दिया और श्रीमती सुशीला भगत जी के त्याग, मेहनत, निष्ठा और ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए कहा कि श्रीमती सुशीला भगत जी के नेतृत्व में स्त्री आर्य समाज निरन्तर उन्नति को प्राप्त कर रही है। 2004 से लगातार प्रधान पद पर रहते हुए निरन्तर समाज सेवा के कार्यों को आगे बढ़ा रही हैं। इस अवसर पर राजमोहिनी सोंधी, ज्योति शर्मा व कमलेश नागरथ ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. सुषमा चोपड़ा जी ने श्रीमती सुशीला भगत जी को जल्दी ही अपनी टीम घोषित करने के लिए कहा। शांतिपाठ के साथ चुनावी कार्यवाही को सम्पन्न किया गया।

-सुशीला भगत प्रधाना स्त्री आर्य समाज मॉडल टॉऊन

पृष्ठ 2 का शेष-श्रद्धा एवं त्याग मूर्त्त महात्मा हंसराज

हंसराज, मानो उनका कुछ अनिष्ट हुआ ही न हो। अपने गुरु देव दयानन्द के अन्तिम शब्द "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" में पूर्ण अटल विश्वास। यही थी श्रद्धा की अग्नि, यही थी यज्ञाहुति। 1933 में जब महर्षि दयानन्द जी की निर्वाण अर्धशती अंजमेर में मनाई जा रही थी तब कुछ साधु सन्यासियों ने स्वामी सर्वदानन्द जी के प्रार्थना की कि वे महात्मा हंसराज जी को संन्यास लेने की प्रेरणा करें तब प्रत्युत्तर में स्वामी जी ने कहा कि वे तो सफेद वस्त्रों में संन्यासी हैं उन्हें मगवा वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं।" महात्मा हंसराज ने चरित्र एवं नैतिकता के लिए प्रत्येक आर्य को पाँच सकार धारण करने की आवश्यकता पर जोर दिया-1. संन्ध्या 2. स्वाध्याय 3. संस्कार 4. सेवा एवं सत्संग।

जीवन के अन्तिम दिनों में भी वे परोपकार, समाज सेवा और समाज सुधार में लगे रहे। 1938 में उनका स्वास्थ्य ऐसा बिगड़ा कि फिर सम्भल न पाए और 14 नवम्बर 1938 अर्ध रात्रि के समय 74 वर्ष की आयु में अपने अन्तिम क्षणों तक पूर्ण सचेत व ओ३म् का स्मरण करते हुए अमरत्व को प्राप्त हुए। विद्या, धर्म, आत्म बलिदान, तप, त्याग परोपकार एवं समाज सेवा का मूर्तरूप, दयानन्द विचारधारा के प्रति पूरी श्रद्धा, विश्वास एवं निष्ठा, हमारे लिए यह महान विभूति एक मार्ग दिखा गए, प्रेरणा दे गए कि हम भी समाज सेवा, त्याग सादगी, सेवा एवं परोपकार के भाव जागृत कर आर्य समाज की सेवा भर पावें। शिक्षा का स्तम्भ जो उन्होंने प्रकाशित किया उसे दूर दूर तक उजाला फैलाने में अपने संस्कारों में प्रज्वलित कर देव दयानन्द का नाम विश्व में फैलाएँ और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" को साकार रूप दें।

पृष्ठ 4 का शेष-जन्म दिवस मनाते हुए...

उपलब्ध होते हैं। अत: जन्म दिवस मनाते समय हमें अपने कर्तव्यों पर विचार कर उसके निर्वहन को प्रमुखता देने के संकल्प के रूप में मनायें तो यह हमारे इस जन्म व परजन्म में लाभदायक हो सकता है। बीता हुआ समय पुन: हाथ में नहीं आता। समय पर यदि कोई काम नहीं करते हैं तो वह भविष्य में शरीर की अवस्था परिवर्तन अर्थात् वृद्धावस्था, रोग व किसी दुर्घटना आदि के कारण किया जाना सम्भव नहीं रहता। अत: हमें जन्म दिवस के ही दिन ऋण व पक्का संकल्प लेकर अपने जीवन को योग व वेद मार्ग पर आरूढ़ करना चाहिये। उसका समय समय पर निरीक्षण एवं मूल्यांकन करते रहना चाहिये। स्वाध्याय में शिथिलता नहीं आने देनी चाहिये। अच्छे योगनिष्ठ लोगों से मित्रता और धर्म व योग के विपरीत सांसारिक पदार्थों में लिप्त लोगों से दूर करने का प्रयास करना चाहिये तभी हमारा वर्तमान और भावी जीवन सुधरेगा। अपने जन्म दिवस पर हमें वैदिक सिद्धान्तों व अपनी जीवन पद्धति का अवलोकन कर अपने जीवन को वेदों के अनुरूप ढालने का संकल्प लेना और उसे मनसा, वाचा व कर्मणा पालन करना ही जन्म दिवस का यथार्थ व सर्वोत्तम प्रयोजन एवं तात्पर्य प्रतीत होता है। इस पर विचार कर स्वयं निर्णय लिया जा सकता है। यदि हम जीवन में किसी बात की उपेक्षा करते हैं तो वह बात कालान्तर में हमारे लिए सिरदर्द बन सकती है। अत: उपेक्षा न कर समाधान करना ही उचित है। लेख को समाप्त करने से पूर्व इतना कहना समीचीन है कि यह सिद्ध है कि वेद ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है।

ईश्वर ने यह संसार बनाया, इसे चला रहा है, हमारे शरीर बनाकर इन सब को व्यवस्थित किये हुए है, सभी प्राणियों का वह पालनकर्ता है, अत: उसका ज्ञान अशुद्ध, असत्य, अनावश्यक व अनुचित नहीं हो सकता। हमारे प्राचीन सभी ऋृषि मुनि भी विद्वान, ज्ञानी व विज्ञानधर्मी व वैज्ञानिक थे। वह सब ईश्वर व वेद पर विश्वास रखने वाले थे। अपने पूर्वज ऋृषियों की तुलना में हम अल्पज्ञानी व अविवेकी हैं, अत: हमारा कल्याण उनकी शरण में जाने से ही हो सकता है। आप इस पर अवश्य विचार करें। ईश्वर आपको सत्य मार्ग अवश्य सुझायेंगे।

आर्य समाज धूरी का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

दिनाक 16-04-17 को आर्य समाज धूरी के हुए चुनाव में वरिन्द्र गर्ग को समाज के प्रति निभाई गई शानदार सेवाओं के चलते सर्वसम्मति से समाज का नया प्रधान चुना गया।

इस संबंधी आर्य समाज धूरी की एक चुनावी मीटिंग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सचिव एडवोकेट भारत भूषण मैनन के नेतृत्व में स्थानीय आर्य सी. सै. स्कूल में हुई। इस मौके पर उनके साथ सभा के सदस्य राम कुमार सोबती भी मौजूद रहे। मीटिंग में समाज के मौजूदा कार्यकारी प्रधान वरिन्द्र गर्ग को सर्वसम्मति से समाज का प्रधान चुना गया, बतौर पर्यवेक्षक मौजूद एडवोकेट भारत भूषण मैनन ने शान्तिपूर्ण ढंग से चुनाव सम्पन्न कराने हेतु समूह सदस्यों को आभार व्यक्त करते हुए प्रधान वरिन्द्र गर्ग को बधाई भी दी। प्रधान चुने जाने के उपरांत वरिन्द्र गर्ग ने समूह सदस्यों का अभार व्यक्त करते हुए कहा कि वह अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी मेहनत से निभाएगे तथा आर्य समाज को और बुलंदी पर ले जाने का प्रयास करेगे।

इस मौके पर प्रहलाद बांसल पूर्व प्रधान, सोमप्रकाश आर्य, सतीश पाल आर्य, पवन कुमार गर्ग, आर. पी. शर्मा, डा. रामलाल आर्य, डा. सुरजित सरीन, अशोक जिन्दल, विकास जिन्दल, विवेक जिन्दल, कर्मचन्द्र आर्य, अशोक गर्ग, वासुदेव आर्य, विवेक शर्मा, प्रिंसिपल बी० एल० कालीया, राजेश आर्य, राजीव मोहिल, रामपाल आर्य, अरुण गर्ग, बिकी आर्य, अनिल आर्य, व आर्य समाज धूरी के सभी सदस्यगण उपस्थित रहे।

-आर्य समाज धूरी

समराला में नव कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज समराला जिला लुधियाना में दिनांक 28 मार्च 2017 मंगलवार आर्य समाज स्थापना दिवस से लेकर 4 अप्रैल 2017 दिन मंगलवार श्री राम नवमी तक लगातार 8 दिन 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ प्रातः 6:30 बजे से 8:00 बजे तक चल रहा था। इस यज्ञ की पूर्णाहुति 4 अप्रैल 2017 श्री रामनवमी को की गई। यज्ञ प्रातः 7:00 बजे से 8:30 बजे तक किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान पुरोहित राजेन्द्र व्रत शास्त्री (वैदिक भजनोपदेशक पंजाब) थे यज्ञ के पश्चात् व्रत जी के मधुर भजन हुए इसके साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनीक अरुण जी के भजन हुए श्री मति कंचन व्रत जी ने वैदिक वाणी का गान किया, तत्पश्चात् स्वामी ब्रह्मवेश जी नाभा द्वारा वेद प्रवचन किया गया यह कार्यक्रम लगभग 7:00 बजे से 11:00 बजे तक चलाया गया। कार्यक्रम के पश्चात् ऋषि लंगर भी अटूट बांटा गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता-यज्ञ ब्रह्मा राजेन्द्रव्रत शास्त्री जी ने की और अध्यक्षीय भाषण में लोगों को अधिक से अधिक सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को प्रेरित किया व आर्य समाज की ओर से 50 सत्यार्थ प्रकाश व शास्त्री जी द्वारा सम्पादित वैदिक नित्य कर्मविधि पुस्तक 200 प्रतीयां आर्य व समस्त परिवारों को बांटी गई। इस अवसर पर श्री अमरनाथ तागरा, श्रीराज कुमार दण्ड, श्री सोम प्रकाश, अम्ब्रेश, संजीव कुमार दुआ, जयदीप, सीमा, शिखा, कंचन व्रत श्रुति, अनुव्रत, अजय, सोमदेव खन्ना, आदि उपस्थित थे।

-कंचन व्रत आर्या स्त्री आर्य समाज समराला

स्वामी सर्वानन्द जी का 117वां जन्म दिवस मनाया गया

दयानन्द मठ दीनानगर में हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी पूज्यपाद संत शिरोमणि स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 117वें जन्मोत्व पर एक अप्रैल से 12 अप्रैल तक वेद प्रचार यात्रा और 13 अप्रैल को आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज के नेतृत्व में एक अप्रैल से 12 अप्रैल तक वेद प्रचार यात्रा का आयोजन आसपास के गांव में किया गया। हर रोज चार कार्यक्रम अलग अलग स्थानों पर किये जाते रहे जिसमें उपदेशकों का अलग अलग विभाजन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय शास्त्री जी, भजनोपदेशक श्री अरुण वेदालंकार जी, श्री जसविन्द्र आर्य जी हरियाणा, श्री संदीप आर्य जी हरियाणा, श्री ओम प्रकाश राघव राजस्थान, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी उत्तर प्रदेश, स्वामी राम मुनि जी मथुरा, श्री जितेन्द्र पुरुषार्थी जी दिल्ली, स्वामी विशोकायति जी पंजाब, श्री हरिश्चन्द्र जी हिमाचल प्रदेश इत्यादि उपदेशकों ने वेद प्रचार यात्रा को सफल बनाने में रात दिन परिश्रम किया। प्रत्येक गांव की आर्य जनता ने भी बड़े उत्साह और उल्लास के साथ वेद प्रचार यात्रा का स्वागत किया। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव पर हर वर्ष बालीवाल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाता है। यह आयोजन 3 दिन लगातार 10,11, एवं 12 अप्रैल को किया गया। जिसमें आसपास की बहुत सी टीमों ने हिस्सा लिया। 13 अप्रैल को 21 हवन कुण्डय यज्ञ से कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

प्रत्येक हवन कुंड पर चार चार यजमान बिठाये गये। यज्ञ पर आर्य जनता का उत्साह देखकर मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने अगले वर्ष और ज्यादा हवन कुंड बनाने की घोषणा की ताकि हर यजमान को हवन पर स्थान मिल सके। यज्ञ के ब्रह्मा शास्त्री निवास आर्य दयानन्द मठ दीनानगर रहे। यज्ञ के बाद ध्वजारोहण आर्य जगत की महान विभूति पं. सत्यपाल जी पथिक और आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा जिला जींद ने किया। दयानन्द मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने इन दोनों विद्वानों को सम्मानित किया। पंडित सत्यपाल पथिक जी को स्वामी सर्वानन्द सिद्धान्त शिरोमणि सम्मान से और आचार्य राजेन्द्र जी गुरुकुल कालवा को आचार्य स्वामी स्वतंत्रानन्द सम्मान से से सम्मानित किया गया। दोनों विद्वानों को शाल, प्रशस्ति पत्र और 51-51 हजार रुपये से सम्मानित किया गया। मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने घोषणा की कि हर वर्ष आर्य जगत किन्हीं दो विद्वानों को मठ द्वारा सम्मानित किया जायेगा। आर्य महासम्मेलन में स्वामी सदानन्द जी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन दयानन्द मठ के स्नातक प्रिसंपील राजिन्द्र जी फतेहाबाद द्वारा किया गया। आर्य महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट और मंत्री श्री सुदेश आर्य जी के नेतृत्व मे जालन्धर की सभी आर्य समाजों से आर्य जन सामूहिक रूप में मठ में पहुंचे। जिला गुरदासपुर, पठानकोट, अमृतसर की सभी आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। दयानन्द मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी महाराज ने अगले वर्ष इसी आर्य महासम्मेलन में 21 गरीब परिवारों की लड़कियों की शादियों की घोषणा की। उसका सारा प्रबन्ध मठ द्वारा किया जायेगा।

दयानन्द मठ दीनानगर में स्वामी सदानन्द जी आचार्य राजेन्द्र जी को सम्मानित करते हुये। उनके साथ खड़े हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, मंत्री श्री सुदेश आर्य जी, श्री बलविन्द्र शास्त्री जी एवं अन्य।

आर्य समाज सन्नौर में फ्री आंखों का कैम्प लगाया

आर्य समाज मंदिर सन्नौर जिला पटियाला में छटा आंखों का फ्री चैकअप कैम्प लगाया गया। प्रातः 9.00 बजे से 10.00 बजे तक आर्य समाज मंदिर की यज्ञशाला में हवन यज्ञ किया गया। जिसके पश्चात आर्य समाज के प्रधान श्री राजेन्द्र वर्मा जी ने कैम्प का उद्घाटन किया। डा. गुरजीत सिंह लैसिक सर्जन त्रिपड़ी जिला पटियाला तथा उनकी टीम ने मरीजों की आंखों का चैक आप किया। इस कैम्प में तकरीबन 150 मरीजों की आंखों का निरीक्षण किया गया। सभी मरीजों को मुफ्त दवाईयां दी गईं। डा. गुरजीत सिंह के अतिरिक्त हरदीप सिंह, गुरप्रीत सिंह, गुरसेवक सिंह, बृजेश मिश्रा, अमरीक सिंह तथा रूपजीत सिंह ने पूरा पूरा सहयोग दिया। कैम्प के आयोजन में श्री रवि मेंहदीरत्ता का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अन्त में श्री राजेन्द्र वर्मा जी प्रधान आर्य समाज, श्री सतीश बदरू मंत्री, श्री सुशील मेहता, रविन्द्र खन्ना, अनीशा खन्ना, रीटा खन्ना तथा अमित ने फ्री कैम्प में सहयोग के लिये डाक्टरों की टीम का धन्यवाद किया। आर्य समाज की तरफ से डाक्टर गुरजीत सिंह एवं उनकी टीम को सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज सन्नौर समय समय पर मैडीकल चैकअप और आंखों का फ्री कैम्प का आयोजन करती रहती है। आर्य समाज सन्नौर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित है और आर्य समाज के सदस्य सभा को हर प्रकार का सहयोग देते रहते हैं। यह आर्य समाज जिला पटियाला में वेद प्रचार का कार्य सुचारू रूप से कर रही है।

प्रधान आर्य समाज सन्नौर

फ्री आंखों के चैकअप का उद्घाटन करते हुए आर्य समाज सन्नौर के प्रधान एवं डा. गुरजीत सिंह एवं अन्य।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।